हिंदी पढ़ने के लिए विदेशी विद्यार्थियों में बढ़ी रूझान

चीन, थाईलैण्ड, मॉरीशस के उन्नीस विद्यार्थियों ने हिंदी अध्ययन के लिए लिया प्रवेश

वर्धा, 25अगस्त, 2011: हिंदी भाषा और साहित्य की अभिवृद्धि तथा विकास, हिंदी में आधुनिक विमर्शों व अंतरानुशासनिक विषयों का अध्ययन व शोध, हिंदी को अधिक प्रकार्यात्मक दक्षता और प्रमुख अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में मान्यता दिलाने के उद्देश्य से स्थापित महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में विदेश से हिंदी सीखने के लिए उन्नीस विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया है, जिसमें चीन से 14, मॉरीशस से 2, थाईलैण्ड से 2 विद्यार्थी तथा जापान से 01 अध्यापक शामिल हैं।

गौरतलब है कि चीन से कु शियाउ लिंग (भारतीय नाम- सरिता), वांग लिउ (निशि), चाउ फांग लिंग (प्रिया), चुउ शि मि (मोगरा), फान शियाउ थिंग (तनुजा), हु लि पिंग (पूजा), लि चिंग (सुषमा), पु पाय लु (रेखा), शिए या या (पूर्वी), याउ शियाउ छु (तरूणा), चु त्वे या (हीरो), लुउ तुंगमिंग (पूर्व), शिन शिन (आसामान), थाईलैण्ड के वितावात रेक्ताविलजय, किटीपोंग बुंकहार्ड, मॉरीशस के तरणदेव जगन्नाथ हिंदी भाषा अध्ययन करने के लिए वर्धा हिंदी विश्वविद्यालय आए हैं।

विश्वविद्यालय में पहली बार इतनी बड़ी संख्या में आए विदेशी विद्यार्थियों का स्वागत भाषा विद्यापीठ में किया गया। विदेशियों के लिए अंतरराष्ट्रीय भाषा हिंदी में सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम का उद्घाटन करते हुए दिल्ली विवि के हिंदी विभाग की पूर्व अध्यक्ष व सुप्रसिद्ध साहित्यकार प्रो.निर्मला जैन ने दो विश्वभाषा के मिलने की घड़ी बताते हुए कहा कि आप यहां सिर्फ भाषा ही नहीं सीखेगें अपितु यहां की सांस्कृतिक परंपरा से भी अवगत होंगे। हिंदी के प्रसार में बौद्ध धर्म का बहुत बड़ा योगदान है, का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि बौद्ध धर्म के प्रचार से ही ह्वेनसांग भारत आए और उन्होंने लौटने के उपरांत यात्रावृतांत व आत्मकथाएं लिखी। भारत ने अपने आप को चीनी आंख से देखा। ह्वेनसांग ने मालवा व मगध की भाषा को पसंद किया था। भारत एक बहुभाषी देश है परंतु हिंदी ही एक ऐसी खिड़की है जिससे आप भारत को जान पाएंगें। उन्होंने वैश्विक बाजार में हिंदी की बढ़ती मांग पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हिंदी भाषी लोग चीन में और चीनी भाषी लोग भारत में बड़ी संख्या में रोजगार पा रहे हैं। आज भाषा और बाजार के रिश्तों को उपेक्षित करके काम नहीं चलेगा। ज्ञान, दर्शन, भाषा, संस्कृति के लिए शुद्ध हिंदी जानना बहुत जरूरी है। साथ ही व्यावहारिक हिंदी भी जानना आवश्यक है।

अध्यक्षीय वक्तव्य में कुलपति विभूति नारायण राय ने कहा कि करीब आधे दर्जन से अधिक देशों के विद्यार्थी यहां हिंदी सीखने के लिए आ रहे हैं। हम विश्वविद्यालय की मूल संकल्पना के तहत ज्ञान,शांति और मैत्री को विश्वपटल पर स्थापित करने में अग्रसर हो रहे हैं। ये विद्यार्थी यहां से हिंदी सीखकर अपने देश लौटेंगे तो सांस्कृतिक दूत के रूप में जाएंगें। इससे हमारे रिश्तों में प्रगाढ़ता आएगी। भाईचारा बढाने में हिंदी भाषा के अमूल्य योगदानों को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि यह भाषा सभी संस्कृतियों का सम्मान करती है। उन्होंने कहा कि दुनियाभर में हिंदी जानने वालों के लिए यह विश्वविद्यालय हिंदी के पठन-पाठन में आ रही दिक्कतों से रू-ब-रू होने के लिए वर्ष में दो बार विदेशियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम चला रहा है, पिछले दिनों यहां आठ देशों के हिंदी अध्यापक आए थे। हमारा यह भी प्रयास होगा कि हम हिंदी को सरल ढंग से सिखाने के लिए जल्द ही पाठ्य सामग्री भी उपलब्ध कराएं। प्रतिकुलपति प्रो.ए.अरविंदाक्षन ने कहा कि विश्वविद्यालय अंतरराष्ट्रीय स्वरूप में आ रहा है और इस स्वरूप को पूरा करने के लिए आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराए जाएंगें। स्वागत वक्तव्य में भाषा विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो.उमाशंकर उपाध्याय ने कहा कि अगर हम इतिहास के पन्नों को पलटें तो पाते हैं कि चीन से दो दूत ह्वेनसांग व फाहियान भारत आए थे। लेकिन आज हमारे यहां चीन से 13 दूत आए हैं, जब ये यहां से हिंदी सीखकर लौटेंगे तो निश्चित रूप से हमारे संबंध सुदृढ़ होंगे। विवि के चीनी भाषा के असिस्टेंट प्रोफेसर अनिर्बाण घोष ने कुलपति विभूति नारायण राय के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि यहां चीनी व हिंदी भाषा सीखने के ख्याल से विद्यार्थियों को बहुत लाभ मिलेगा। वर्ष 2011 भारत-

चीन सांस्कृतिक आदान-प्रदान का है। यहां से भी विद्यार्थियों व अध्यापकों को चीन भेजा जाना चाहिए। स्पेनिश भाषा के असिस्टेंट प्रोफेसर रवि कुमार भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, नई दिल्ली का आभार मानते हुए कहा कि इससे हिंदी का भूमंडलीकरण होगा।

मंचस्थ अतिथियों व विदेश से आए विद्यार्थियों का स्वागत पुष्पगुच्छ प्रदान कर किया गया। मंच का संचालन भाषा विद्यापीठ के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ.अनिल दूबे ने किया तथा डॉ. अनिल कुमार पाण्डेय ने आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर विवि के राइटर-इन-रेजीडेंस डॉ. सुरेश शर्मा, डॉ. महेन्द्र सी पाण्डेय, प्रो.अनिल के. राय अंकित, प्रो.रवि चतुर्वेदी, नरेन्द्र सिंह, डॉ. सी.अन्न्पूर्णा, डॉ. फरहद मलिक, डॉ. डी.एन.प्रसाद, डॉ. हरीश हुनगुन्द, डॉ.वीरेन्द्र यादव, डॉ.राजीव रंजन राय सहित बड़ी संख्या में अध्यापक, शोधार्थी व विद्यार्थी उपस्थित थे।

सांस्कृतिक परंपरा को सराहा- अतिथि देवो भवः की संकल्पना को साकार होते देखकर हिंदी शिक्षण के लिए विदेश से आए विद्यार्थियों ने विश्वविद्यालय को धन्यवाद देते हुए यहां की सांस्कृतिक परंपरा को सराहा। जहां चीन से आई छात्रा रेखा ने कहा कि हमारे देश और भारत के बीच की दोस्ती बहुत मजबूत होगी वहीं मोगरा का कहना था कि जब हम हिंदी सीखने के लिए भारत आने वाले थे तो वहां हमें कहा जा रहा था कि भारतीय अंग्रेजी बोलते हैं तो फिर आप हिंदी सीखने के लिए भारत क्यों जा रहे हैं, मैं देख रही हूं कि यहां सभी लोग हिंदी बोल रहे हैं। पूजा ने तो प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि यहां का वातावरण हिंदी है, हम यहां से अच्छी हिंदी सीखकर जाएंगें।

अभिविन्यास कार्यक्रम में शामिल हुए थे विदेशी अध्यापक- कुछ माह पूर्व विदेश में हिंदी पढानेवाले अध्यापकों के लिए विवि में अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया था, जिसमें महात्मा गांधी संस्थान, मोका (मॉरीशस) के डॉ. जयचंद लालबिहारी, विदेशी अध्ययन विश्वविद्यालय, बीजिंग (चीन) की हिंदी की शिक्षिका यालान ली, मॉरीशस की रश्मि लालबिहारी, रामखमहेयंग विश्वविद्यालय, बैंकाक (थाईलैण्ड) के डॉ.सथित चैपुनिया, हैम्बर्ग विश्वविद्यालय, जर्मनी के डॉ. राम प्रसाद भट्ट, शिल्पाकॉर्न विश्वविद्यालय, बैंकाक के प्रो. बुमरूंग खामइक, जागरेब विश्वविद्यालय, क्रोएशिया की डॉ. बिलजाना शामिल हुई थीं।

-अमित कुमार विश्वास